RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 27 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 16 सितम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 27, 13-16 सितम्बर 2018 तदनुसार 31 भद्रपद, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

हमें अबाध शरण दो

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

सुगो हि वो अर्यमन्मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति।
तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म।।

-अ० २।२७।६

शब्दार्थ-हे **अर्यमन्** = न्यायनिष्ठभाव! हे **मित्र** = स्नेह! हे **वरुण** = लोकसंग्रह! **हि** = सचमुच **वः** = तुम्हारा **पन्थाः** = मार्ग **सुगः** = सुगम **अनृक्षरः** = कण्टकादिरहित तथा **साधुः** = उत्तम **अस्ति** = है। हे **आदित्याः** = आदित्यो=न्यायादि अखण्डनीयभावो! **तेन** = उस मार्ग से **नः** = हमें **अधि+वोचत** = लक्ष्यपूर्वक बतलाओ और **नः** = हमें **दुष्परिहरन्तु** = न हटाया जा सकने वाला **शर्म** = शर्म, कल्याण, अथवा शरण **यच्छत्** = दो।

व्याख्या-संसार-पथ अनेक विघ्न-बाधाओं से व्यस्त तथा लथपथ होने के कारण अत्यन्त विषम हो रहा है। ईर्ष्या-द्वेष, राग, मत्सर, क्रोध, लोभ आदि के कारण यहाँ घातपात, असत्य, लूट, चोरी, डाका, व्यभिचार, अशुचिता, असन्तोष, भोग-विलास, मिथ्या प्रलाप, नास्तिकता आदि नाना पापभावनाओं का साम्राज्य हो रहा है। परिस्थिति के वशीभूत होकर अथवा अल्पज्ञता आदि किन्हीं अन्य कारणों से परिचालित होकर मनुष्य इनसे अभिभूत अवश्य हो जाता है, किन्तु मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति इधर नहीं है। ऋषि कहते हैं-''मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्यासत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है।'' अतः सत्यज्ञान होने पर वह सत्य की ओर ही प्रवृत्त होता है सत्यज्ञान होने पर उसे द्वेष-मत्सर आदि दुर्गुणों से ग्लानि होती है और वह अपने हृदय की सूक्ष्म, ललित, उत्तम भावनाओं को जगाता है और कहता है-**सुगो हि वो पन्था साधुरस्ति** = तुम्हारा मार्ग सुगम, बाधारहित तथा प्रशस्त है।

निःसन्देह न्यायनिष्ठा, मैत्रीभावना तथा लोकसंग्रह की चेष्टा मनुष्य के हृदय का मल धो डालते हैं। जिस मार्ग से मन की शुद्धि हो, हृदय विमल हो, उस मार्ग के साधु होने में सन्देह ही क्या ? जब मनुष्य ने मैत्रीभावना का परिपाक कर लिया तब उसका विरोध न होने से उसका मार्ग सचमुच अनृक्षर = कण्टकरहित हो गया। जब मार्ग में कोई बाधा ही न हो, तब वह अवश्य = सुगः = सुगम होता है। वेद में अनेक स्थानों पर मित्र, वरुण तथा अर्यमा भावों को आदित्य कहा गया है। आदित्य का लक्षण वेद में इस प्रकार किया गया है-**'आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः '** [ऋ० २।२७।२]-पवित्र धारा से पवित्र करने वाले, निर्दोष, अनिन्द्य और अहिंसक आदित्य होते हैं। सचमुच ऐसों का मार्ग सुगम होता है। इनकी शरण भी अवश्य दुष्परिहर होती है। आदित्यों का मार्ग किनके लिए हितकारी होता है, इसका उत्तर ऋग्वेद [१।४१।४] में इस प्रकार दिया है।

'सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते' = हे आदित्यो! ऋतगामी के लिए मार्ग सरल और बाधारहित होता है। उत्तम भावों की प्राप्ति के लिए ऋतज्ञान तथा ऋतानुसार आचरण आवश्यक है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव तꣳ सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या।।

-यजु० १७.२७

भावार्थ-जो परमेश्वर, हम सबका रक्षक, जनक और हमारी सब कर्मों का फलप्रदाता है, वही भगवान्, सब लोक लोकान्तरों का ज्ञाता और अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्र, वरुण, मित्र, वसु, यम, विष्णु, बृहस्पति प्रजापति आदि दिव्य, देवों के नामों को धारण करने वाला एक ही अद्वितीय अनुपम परमात्मा है, उसी परमात्मा के आश्रित होकर, अन्य सब लोक गतिशील हो रहे हैं। दुर्लभ मानवदेह को प्राप्त हो कर, इसी परमात्मा की जिज्ञासा करनी चाहिए। इसी के ज्ञान से मनुष्य देह सफल होगी अन्यथा नहीं।

दृते दृꣳह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं
ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम्।।

-यजु० ३६.१९

भावार्थ-मनुष्य को योग्य है कि, ब्रह्मचार्यादि साधन सम्पन्न होकर युक्त आहार विहार पूर्वक औषध आदि का यथार्थ ज्ञान अवश्य सम्पादन करे, क्योंकि परमात्म-ज्ञान के बिना बहुत काल तक जीना भी व्यर्थ ही है। अतएव इस मन्त्र में प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे सर्वशक्तिमन् परमात्मन्! आप कृपा करें कि मैं दीर्घकाल तक जीता हुआ आपके ज्ञान और सच्ची भक्ति को प्राप्त होकर, अपने मनुष्य जन्म को सफल करूँ।

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि।
नैनमूर्ध्वं न तिर्य्यञ्चं न मध्ये परिजग्रभत्।।

-यजु० ३२.२

भावार्थ-जिस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् प्रकाशमान पूर्ण परमात्मा से, क्षण, घटिका, दिन, रात्रि काल के सब अवयव उत्पन्न हुए हैं, और जिससे सारे जगतों की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, नियमनादि होते हैं, उस जगत्पिता परमात्मा को, कोई भी नीचे, ऊपर, बीच में से वा तिरछे ग्रहण नहीं कर सकता। ऐसे पूर्ण जगदीश परमात्मा को योगाभ्यास, ध्यान, उपासनादि साधनों से ही जिज्ञासु पुरुष जान सकता है, अन्यथा नहीं।

'जन्म-मृत्यु रहस्य'

ले०-मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

हम संसार में मनुष्य जन्म और मृत्यु दोनों को समय समय पर होते देखते हैं। यदि हम अपने परिवार के सदस्यों पर विचार करें तो हमें ज्ञात होता है कि हमारे माता, पिता हैं, उनके माता-पिता भी होते हैं या रहे होंगे और जिन्हें हम दादा-दादी कहते थे उनके भी माता-पिता अर्थात् परदादी व परदादा थे। आज जब हम इन सभी संबंधियों को देखते हैं तो किसी परिवार में दादा-दादी यदि हैं भी तो परदादा व परदादी तो बहुत ही कम परिवारों में होने की आशा की जाती है।

वह और उनसे पूर्व के सभी सम्बन्धी मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। इससे हमें यह ज्ञान मिलता है कि संसार में जन्म और मृत्यु का चक्र चल रहा है। यह चक्र कब से आरम्भ हुआ? यदि इस पर विचार करें तो विवेक से ज्ञात होता है कि यह जन्म-मृत्यु का चक्र तभी से चल रहा है जब से कि यह सृष्टि बनी है और पृथिवी पर अमैथुनी प्राणी सृष्टि हुई। उसके बाद से मैथुनी सृष्टि हुई और अमैथुनी के सभी प्राणी अपनी आयु पूरी होने पर मृत्यु को प्राप्त हुए। मैथुनी सृष्टि के प्राणी भी जन्म लेने के बाद अपनी-अपनी आयु भोग कर मृत्यु को प्राप्त होते आ रहे हैं। आज भले ही हम स्वस्थ हों, परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि हम मरेंगे नहीं। मृत्यु तो एक दिन आनी ही है, वह कब आयेगी यह निश्चित रूप से वर्ष, महीने व दिन के रूप में नहीं बता सकते परन्तु यह कभी भी आ सकती है। जन्म व मृत्यु का चक्र अन्य प्राकृतिक नियमों की तरह परमात्मा ने बनाया है। जन्म व मृत्यु की यह व्यवस्था सृष्टि की अटल व्यवस्था है। संसार में यह नियम काम कर रहा है कि जिसका जन्म व उत्पत्ति होती है उसकी मृत्यु व नाश अवश्य होता है। संसार में भौतिक पदार्थों से जो भी वस्तुएं बनी हैं, वह बनने के बाद से ही पुरानी व क्षीण होने लगती हैं और कुछ काल बाद वह नष्ट हो जाती हैं। हम अपने लिये अच्छे वस्त्र सिलवाते हैं। यह बनने के समय नवीन व आकर्षक होते हैं। दिन प्रतिदिन हम इनका उपयोग करते हैं। इससे यह पुराने होते जाते हैं और जीर्ण होकर नष्ट हो जाते हैं। इसी को इनका नाश होना कहते हैं। ऐसा ही अन्य सभी भौतिक पदार्थों के विषय में होता है। हमारी यह सृष्टि भी 1.96 अरब वर्ष पहले बनी है। इसकी कुल आयु 4.32 अरब वर्ष है। जब इसका काल पूरा हो जायेगा तो परमात्मा इसकी प्रलय व नाश कर देंगे। प्रलय के बाद यह पुनः अपने मूल स्वरूप सत्व, रज, तम की साम्यावस्था को प्राप्त होती है और इतनी ही अवधि तक प्रलय अवस्था में रहकर ईश्वर के द्वारा इससे पुनः नई सृष्टि का सृजन किया जायेगा। सृष्टि में सृष्टि-प्रलय-सृष्टि का क्रम व चक्र अनादि कल से चल रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। कभी इस सृष्टि-प्रलय क्रम का अन्त होने वाला नहीं है। इसी को सृष्टि का प्रवाह से अनादि होना कहते है। मनुष्य का शरीर जड़ है और यह प्रकृति के परमाणुओं व कणों से बना हुआ है। शरीर को बनाने वाला परमात्मा है। कोई भी ज्ञानपूर्वक रचना किसी निमित्त चेतन ज्ञानवान सत्ता से ही होती है। जीवात्मा स्वयं अपने व दूसरों के शरीर की रचना नहीं कर सकते। हां, वह इस कार्य में सहायक हो सकते हैं। परमात्मा जीवात्माओं को सुख व उनके कर्मों का भोग कराने के लिए उनके पूर्व जन्म के कर्मानुसार शरीर को बनाते है। यदि पूर्वजन्म में हमने आधे से अधिक शुभ व पुण्य कर्म किये हैं तो जीवात्मा को मनुष्य का शरीर मिलता है अन्यथा पशु, पक्षी आदि प्राणियों के शरीर मिलतें हैं। मनुष्य योनि उभय योनि हैं जहां वह शुभाशुभ कर्म करने के साथ पूर्व किये हुए कर्मों का फल भी भोगता है जबकि सभी मनुष्येतर योनियों में जीवात्माओं को अपने कर्मों का भोग करना होता है। वह स्वतन्त्र कर्ता नहीं होते जिसका कारण यह है कि उनके पास विचार शक्ति वा बुद्धि नहीं है। उनके पास कर्म करने के लिए हाथ भी नहीं है और न ही बोलने व अपनी बात को किसी दूसरे पशु को कहने के लिए वाणी ही है। यही कारण है कि कोई मनुष्य पशु बनना नहीं चाहता परन्तु ज्ञान व संकल्प की कमी के कारण वह अशुभ व पाप करते है जिससे उन्हें परजन्मों में पशु-पक्षियों आदि अनेकानेक योनियों में जन्म लेना पड़ता है। मनुष्यों को पशु आदि निम्न योनियों व मनुष्यों में भी अशिक्षित व अज्ञानी तथा निर्धन व दुर्बल माता-पिता के यहां जन्म मिले, इसके लिए सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेद ज्ञान दिया था। वह ज्ञान आज भी सुरक्षित एवं उपलब्ध है। उस ज्ञान को पढ़कर व उन पर ऋषियों के भाग्य व टीकायें तथा उनके अनुसार अपना जीवन बनाकर हम पशु पक्षी योनियों में जाने से बच सकते हैं और मनुष्य योनि में भी अच्छे ज्ञानी व वेद धर्मनिष्ठ माता-पिता से जन्म लेकर अपने जीवन को वेद मार्ग पर चला कर सुखी व सम्पन्न रहकर सुख भोग सकते हैं।

मनुष्य का जन्म हमें पूर्व जन्मों के कर्मों के आधार पर मिलता है। हम इस जन्म में मनुष्य बने हैं, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम अपने कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान प्राप्त करें। वेद और ऋषि मुनियों के वेदानुकूल ग्रन्थों जैसा निर्भ्रान्त ज्ञान मत-मतान्तरों के ग्रन्थों से प्राप्त नहीं होता। इसके लिये मुख्य आश्रय केवल वेद व वेदानुकूल ग्रन्थ हैं जो ऋषियों के बनाये हुए हैं।

इसका स्वाध्याय कर इनसे लाभ उठाया जा सकता है। इसका लाभ यह होता है कि मनुष्य इन ग्रन्थों में उपदिष्ट कर्त्तव्यों का पालन करके शुभ व पुण्य कर्मों का संग्रह कर सकता है जिससे उसे इस जीवन में सुख मिलता है और उसका परजन्म भी श्रेष्ठ मनुष्य योनि में होने के साथ माता-पिता भी वेद ज्ञानी व देव कोटि के मिलते हैं।

हमारा मानव शरीर पृथिवी, अग्नि, जल, वायु और आकाश इन पंच भौतिक तत्वों से बना है। यह शरीर अमर नहीं हो सकता। यह अधिक से अधिक 1 सौ या तीन चार सौ वर्ष ही जीवित रह सकता है जिसका आधार जीवात्मा का प्रारब्ध और इस जन्म में उसका ज्ञान व कर्म होते हैं। महाभारत काल में 100 वर्ष व उससे अधिक 200 वर्ष तक की आयु के मनुष्य रहे हैं। भीष्म पितामह की आयु लगभग 180 वर्ष थी। आजकल भी 100 व 150 वर्ष की बीच की आयु के मनुष्य जापान व चीन आदि देशों में हैं। इससे अधिक आयु के मनुष्य वर्तमान में किसी देश में नहीं हैं। अतः मनुष्य कितना भी ध्यान रखे, उसे 100 व 150 से अधिक वर्ष की आयु प्राप्त नहीं हो सकती। इस बीच तो मृत्यु आयेगी और आत्मा को अपने शरीर को छोड़कर जाना ही होगा। वेदों में बताया गया है कि परमात्मा ही जीवात्मा को शरीर से युक्त करता है व मृत्यु के समय पर उसे शरीर से वियुक्त करता है। शरीर से वियुक्त करने का कारण यह है मानव शरीर जीवात्मा के रहने योग्य नहीं रहा। उसमें अनेक विकार आ चुके हैं। अब जीवात्मा शरीर में रहकर कर्मों का भोग नहीं कर सकता। यही मृत्यु का कारण प्रतीत होता है। मृत्यु होने के बाद जीवात्मा अपने कर्मों के अनुसार परमात्मा की कृपा से नये माता-पिता, परिवार व नया देह प्राप्त करता है और शिशु अवस्था में जन्म से उन्नत होता हुआ पुनः युवा व वृद्धावस्था तक जाता है। इस नये जीवन में उसे पुनः शिशु, किशोर, कुमार, युवा आदि अवस्थाओं में मिलने वाले सुख पुनः प्राप्त होते हैं जो पूर्वजन्म के शरीर में सम्भव नहीं थे। इससे मनुष्य का पुनर्जन्म भी सिद्ध होता है। जिस प्रकार रात्रि के बाद दिन और दिन के बाद रात्रि अवश्य आती है उसी प्रकार जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म भी निश्चित रूप से होता है। जब तक कर्मों का क्षय और मनुष्य को ईश्वर का साक्षात्कार होकर विवेक प्राप्त नहीं होगा, जन्म व मरण का चक्र चलता ही रहेगा। जन्म मरण का चक्र मोक्ष पर विराम पाता है। मोक्ष मिलने पर मनुष्य का जन्म व मरण लम्बी अवस्था के लिये बन्द हो जाता है और जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य में रहकर आनन्द का भोग करता है। यही जीवात्मा की चरम सुख की अवस्था होती है। इसके बाद जीवात्मा की कोई अभिलाषा शेष नहीं रहती। समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार होने पर उसे जीवन का सबसे बड़ा सुख व आनन्द मिलता है। यह आनन्द सभी भौतिक सुखों से परिमाण व अनुभव में सर्वश्रेष्ठ होता है। जीवात्मा के विषय में यह भी जानना है कि ईश्वर ही इसका सनातन व शाश्वत साथी है। ईश्वर जीवात्मा का पिता, माता,

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में भारत की राजधानी दिल्ली में विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के रूप में आयोजित किया जा रहा है। यह महासम्मेलन दिल्ली के स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी सैक्टर-10 में 25 से 28 अक्तूबर 2018 तदनुसार कार्तिक कृष्ण १,२,३,४ विक्रमी संवत् २०७५ को आयोजित किया गया है। इस महासम्मेलन में सम्पूर्ण विश्वभर के आर्यजन पधार रहे हैं। यह महासम्मेलन भव्य और ऐतिहासिक होगा जिससे आर्य समाज के प्रचार कार्यों को नई दिशा मिलेगी। आर्य समाज जैसे श्रेष्ठ संगठन की विचारधारा और वेदों पर आधारित महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों से लोगों को अवगत कराने का सफल प्रयास इस महासम्मेलन के द्वारा किया जाएगा। वेद वाणी का घर-घर में प्रचार हो, लोग पाखण्ड़ और अन्धविश्वासों से बचें, अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि हो, यही इस महसम्मेलन का मुख्य प्रयोजन है। आज हमारे सामने प्रदूषण की सबसे विकट समस्या है। इस महासम्मेलन में भव्य रूप में यज्ञ का आयोजन करके लोगों को प्रतिदिन अपने-अपने घरों में यज्ञ करने की प्रेरणा दी जाएगी। वर्तमान में आर्य समाज के समक्ष आ रही चुनौतियों तथा भविष्य में आने वाली चुनौतियों से किस प्रकार निपटा जाये तथा राष्ट्र की ज्वलंत समस्याओं पर भी बुद्धिजीवी लोग विचार करेंगे। इसलिए यह आर्य महासम्मेलन कोई प्रदर्शन या दिखावे के लिए नहीं अपितु राष्ट्र की एवं विश्व की सम्पूर्ण समस्याओं को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि पंजाब (रजि.) के द्वारा इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए एक विशेष अभियान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया है। इस अभियान का प्रारम्भ 24 जून को किया गया था जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, हरियाणा सभा के प्रधान श्री रामपाल आर्य तथा महामन्त्री श्री उम्मेद शर्मा जी ने भी भाग लिया था। इस कार्यकर्ता सम्मेलन में पंजाब की सभी आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। यह कार्यकर्ता सम्मेलन पूर्ण रूप से सफल रहा था। इसी प्रकार अब पंजाब के प्रत्येक जिले में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। सर्वप्रथम 29 अगस्त को जालन्धर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों के साथ सभा कार्यालय गुरूदत्त भवन किशनपुरा चौक जालन्धर में बैठक की गई। इस बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने आह्वान करते हुए कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए अभी से तैयारियों में जुट जाएं। उन्होंने सभी आर्य समाजों के अधिकारियों को अधिक से अधिक लोगों को प्रेरित करने के लिए कहा। इस बैठक में जालन्धर की सभी आर्य समाजों के अधिकारियों ने भाग लिया और सभी ने एकजुट होकर कहा कि हम सभी पूरे तन-मन और धन से इस महासम्मेलन में अपना योगदान देंगे।

इसी श्रृखला में 7 सितम्बर को आर्य कॉलेज लुधियाना में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में एक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें लुधियाना, रायकोट, दोराहा, समराला, सरहिन्द की आर्य समाजों के अधिकारियों तथा कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इस बैठक में श्री सुदर्शन शर्मा जी ने बताया कि दिल्ली में एक ऐतिहासिक और भव्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रूपी महाकुम्भ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें पूरे विश्वभर के आर्यजन भाग ले रहे हैं। इस महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब(रजि.) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास सबसे पुराना है। सार्वदेशिक सभा की स्थापना से पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना हो चुकी थी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के माध्यम से कई आन्दोलन देश की आजादी से पहले और देश की स्वतन्त्रता के पश्चात किए गए हैं। दिल्ली और हरियाणा पंजाब का ही अभिन्न अंग हुआ करते थे। तीनों का अस्तित्व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रूप में था। आज भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को भरपूर मान-सम्मान दिया जाता है। इसलिए हम सभी का कर्त्तव्य है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन को सफल बनाने के लिए पूर्ण रूप से सहयोग प्रदान करें। सभा महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने विस्तार से महासम्मेलन की व्यवस्थाओं का विवरण देते हुआ कहा कि शीघ्र अति शीघ्र इस महासम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजनों की संख्या सभा को सूचित करें ताकि उनके भोजन तथा खान-पान की समुचित व्यवस्था की जा सके। लुधियाना के सभी आर्यजनों ने इस बैठक में भरपूर उत्साह दिखाया और अधिक से अधिक संख्या में इस महासम्मेलन में भाग लेने का आश्वासन दिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) का यह प्रयास निरन्तर जारी है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पंजाब के अधिक अधिक आर्यजन भाग लें। इसके लिए यह अभियान पंजाब के सभी जिलों में चलाया जा रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी अपनी पूरी कार्यकारिणी के साथ पूरे उत्साह से इस कार्य में संलग्न हैं तथा आर्यजनों को भी इसमें भाग लेने के लिए उत्साहित कर रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि सभी अपने-अपने स्तर पर इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन की तैयारियों में जुट जाएं। जिस भव्यता के साथ इसका आयोजन किया जा रहा है उसी भव्यता के साथ इसका समापन होना चाहिए। सम्पूर्ण विश्व में आर्य समाज की एकता का संदेश इस महासम्मेलन के माध्यम से जाना चाहिए। जिस प्रकार आर्य समाज ने अपने प्रारम्भिक काल में कुरीतियों, पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों तथा अन्य बुराईयों को दूर करने के लिए कार्य किया है उसी प्रकार वर्तमान में भी राष्ट्र के समक्ष जो चुनौतियां हैं उन्हें दूर करने के लिए अभियान प्रारम्भ करें। यह कार्य तभी हो सकता है अगर आर्य समाज का संगठन मजबूत होगा। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के माध्यम से समाज में आर्य समाज की एकजुटता का संदेश जाएगा। इस महासम्मेलन में देश में पनप रही कुरीतियों, बुराईयों तथा अन्धविश्वासों पर गहन चिन्तन किया जाएगा। आज समाज किस तरह अन्धविश्वासों में फंस चुका है इसका उदाहरण दो-तीन महीने पहले दिल्ली के बुराड़ी काण्ड में देखने को मिला था। एक ही परिवार के सभी सदस्यों ने किसी के बहकावे में आकर सामूहिक रूप से आत्महत्या कर ली थी। इसी प्रकार की कई घटनाएं देश के अलग-अलग स्थानों पर घटित हो रही हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के माध्यम से इन सभी के ऊपर चिन्तन किया जाएगा और समाज को पाखण्ड़ और अन्धविश्वास मुक्त बनाने के लिए कार्य किया जाएगा। इसलिए जितनी अधिक संख्या में लोग इसमें भाग लेंगे, उतना ही लाभ समाज को होगा। सभी आर्यजन वेद की वाणी को घर-घर तक पहुंचाने तथा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए संकल्प लेकर कटिबद्ध हो जाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

व्रतमय जीवन जीना सीखो

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

आर्यों का जीवन व्रतमय होता है, वे व्रती होते हैं। मानवता के विकास के लिए जिन गुणों जैसे सत्य, अहिंसा, अस्तेय अपरिग्रह, शौच, सन्तोष ब्रह्मचर्य, तप, स्वाध्याय, परस्पर सहयोग, वात्सल्य, प्रेम आदि की आवश्यकता है, वे सब अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। यजुर्वेद का प्रारम्भ भी सत्य को जीवन में धारण करने के व्रत से हुआ है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात सत्यमुपैमि। यजुर्वेद 1.5

अर्थात्-(अग्ने) हे अग्नि स्वरूप तेजस्वी प्रभो। (व्रतपते) आप सभी व्रतों के स्वामी है। सभी श्रेष्ठ गुण आप में ही आश्रय प्राप्त करते है। (व्रतम् चरिष्यामि) प्रभो। मैं भी एक व्रत धारण करने वाला हूँ। (तत्) उस (शकेयम्) व्रत का मैं पालन कर सकूं (तत मे राध्यताम्) मेरा यह व्रत सिद्ध हो, मैं इस व्रत का सदैव पालन कर सकूं, कभी भी खण्डन मेरे द्वारा न हो। (अहम्) मैं (अनृतात) असत्य को छोड़कर (इदम्) इस (सत्यम्) सत्य को (उपैमि) धारण करता हूँ।

व्रत को धारण करने के पश्चात् निडर होकर उसे जीवन में धारण करते रहना है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअत-मेरूर्यतोऽत मेरू र्यजमानस्य
प्रजां भूयात् त्रिताय त्वा द्विताय त्वै। यजुर्वेद 1.23

अर्थात्-(मा भेः) तू डर मत। अभय होकर रह। (मा संविक्थाः) तू उद्वेग से कम्पित मत हो। (यज्ञः) तेरा यज्ञ (अतमेरू) कभी श्रान्त होने वाला न हो, ग्लानि रहित श्रद्धावान् (प्रजा) सन्तान (भूयात्) तुझे प्राप्त हो। (त्वा) मैं तुझे (त्रिताय) ज्ञान कर्म और उपासना के विस्तार के लिए प्रेरित करता हूँ। (द्विताय त्वा) तुझे इन ज्ञान और कर्म का ही विस्तार करने के लिए कहता हूँ। (एकताय त्वा) मैं तुझे ज्ञान के विस्तार के लिए ही प्रेरित करता हूँ।

इस मन्त्र में पहले ज्ञान कर्म और उपासना की प्रेरणा दी गई है और फिर इन तीनों में से भी ज्ञान और कर्म पर अधिक ध्यान देने को कहा गया है फिर इन ज्ञान और कर्म में भी ज्ञान की श्रेष्ठता होने के कारण ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई है। वास्तव में संसार में ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ निधि है। सभी महापुरूषों एवं शास्त्रों का कथन भी यही है कि ज्ञान के अभाव में मुक्ति कभी भी संभव नहीं। सांख्य में जिस ईश्वर के दर्शन के विषय में कहा गया है कि 'ईश्वरा सिद्धे' ईश्वर ज्ञानेन्द्रियों अथवा कर्मेन्द्रियों के द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता हैं उस ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण भी ज्ञान के द्वारा संभव माना जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म माना गया है। यजुर्वेद में यज्ञ से मिलने वाले लाभों का वर्णन हुआ है।

वसो पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मोऽसि विश्व धाऽअसि
परमेण धाम्ना दृ ँहस्वमा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्। यजु. 1.2.

अर्थ-(वसोः) यज्ञ से (पवित्र असि) तू पवित्र हुआ है। (द्यौः असि) तू प्रकाशमान जीवन वाला है। (पृथिवी, असि यज्ञ से तू अपनी शक्तियों का विस्तार करने वाला बना है। (मातरिश्वनः धर्मः असि) इस यज्ञ से तेरी प्राण शक्ति की वृद्धि हुई है। (विश्वधाः असि) यज्ञ से तू सबका धारण करने वाला बना है। (परमेण धाम्ना) उत्कृष्ट तेज से (द ँहस्व) तू अपने को दृढ़ बना। (मा ह्वाः) अपने जीवन में तू कुटिल गतिवाला मत बन। (ते) तेरे विषय में (यज्ञपतिः) इस सृष्टि यज्ञ का स्वामी परमात्मा (मा ह्वार्षीत्) कठोर नीति का अवलम्बन न करे।

यज्ञ के जो लाभ बताये गये हैं उनका अर्थ है कि हम नित्य यज्ञ करने का व्रत लें। यज्ञ के साथ वेदाध्ययन का भी व्रत लिया जाना चाहिए।

सावित्रवायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः।
इन्द्रस्य त्वा भाग ँसोमेना तनच्मि विष्णो हव्य ँरक्ष। यजु. 1.4.

अर्थ-हे (विष्णो) सर्व व्यापक प्रभो। आप जिस वेद वाणी का धारण करते हैं (सा) वह (विश्वायु) पूर्ण आयु देने वाली (सा) वह (विश्वकर्मा) सम्पूर्ण क्रिया काण्ड के पूर्ण करने वाली और (सा) वह (विश्व धायाः) सम्पूर्ण जगत् को धारण करने वाली है। इसी से मैं (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (भागम्) सेवनीय यज्ञ को (सोमेन) आनन्द से (आतनज्मि) अपने हृदय में दृढ़ करता हूँ तथा हे परमेश्वर। (हव्यम्) यज्ञ सम्बन्धी द्रव्य अथवा विज्ञान की (रक्ष) सदा रक्षा कीजिये।

हमें शाकाहार का भी व्रत धारण करना चाहिए।

धान्यमसिधिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णा-त्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि। यजु. 1.20.

अर्थ-जो (धान्यम्) यज्ञ से शुद्ध, सुख का हेतु, रोग का नाशक चावल, यव आदि अन्न तथा (पयः) जल (असि) है। वह (देवान्) विद्वान् अथवा जीव और इन्द्रियों को (धिनुहि) तृप्त करता है। (त्वा) उसको (प्राणाय) अपने जीवन के लिए (त्वा) उसे (उदानाय) स्फूर्ति बल और पराक्रम के लिए, (त्वा) उसे (व्यानाय) सब शुभ गुण, शुभ कर्म अथवा विद्या के अंगों को फैलाने के लिए (दीर्घाम्) बहुत दिनों तक (प्रसितिम्) अत्युत्तम सुख बन्धन युक्त (आयुषे) पूर्ण आयु के भोगने के लिए (धाम्) धारण करता हूँ।

मनुष्य को एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करनी चाहिए। उपासना भी श्रद्धापूर्वक एवं नियमित करें। नित्य उपासना का भी व्रत लें।

त्र्यम्बंक यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारूकमिव बन्ध-नान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। ऊर्वारूकमिव बन्धना-दितो मुक्षीय मामुतः। यज. 3.60

अर्थ-हम लोग (त्र्यम्बकम्) ऋग्यजुः साम: मन्त्रों द्वारा ज्ञान, कर्म और उपासना देने वाले परमात्मा का (यजामहेः) पूजन करते हैं, निरन्तर स्तुति करते हैं। (सुगन्धिम्) वे प्रभु हमारे साथ उत्तम गन्ध सम्बन्ध रखने वाले है। (पुष्टि वर्धनम्) हमारी सृष्टि का वर्धन करने वाले हैं। (मृत्योः) इस मरण धर्मा शरीर से (मुक्षीय) मैं इस प्रकार मुक्त हो जाऊँ (इव) जैसे पूर्ण परिपक्व हुआ (ऊर्वारूकम्) खीरा (बन्धनात्) बन्धन से मुक्त हो जाता है (मा अमृतात) मैं मोक्ष से छूटने वाला न होऊँ। (त्र्यम्बकम्) ज्ञान, कर्म और उपासना के उपदेष्टा प्रभु की (यजामहे) हम उपासना करते हैं। (पतिवेदनम्) मुझे सच्चे रक्षक को प्राप्त कराने वाले हैं। (बन्धनान्) नाना प्रकार के आकर्षण एवं बांधने वाले पितृगृह से कन्या जैसे शान्ति से जाती है (इव) जैसे कि (उर्वारूकम्) परिपक्व खीरा (खरबूजा) (बन्धनात्) बन्धन से अलग हो जाता है। (इतः) इस संसार के बन्धव से (मुक्षीय) मैं छूट जाऊँ। (माअमुतः) इस संसार से परे उस प्रभु से कभी अलग न होऊँ।

यजुर्वेद हमें बार-बार व्रती बनने की शिक्षा देता है।

व्रतं कृणुताग्नि र्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीका-मभिष्टये वर्चोधा यज्ञ वाहस ँ सुतीर्थानोऽअसद्वशे।
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्ष क्रतवस्ते नोऽवन्तु ते नः पान्तुतेभ्यः स्वाहा। यजु. 4.11

अर्थ-हे मनुष्यों। (व्रतम् कृणुत) तुम व्रत करो। (व्रतम् कृणुत) व्रत करो। (ब्रह्म अग्निः) प्रभु तुम्हें आगे ले चलने वाले हैं। (अग्निः यज्ञः) यह यज्ञ अग्रणी है। हमारी उन्नति का कारण है। ब्रह्मयज्ञ एवं देव यज्ञ करते हुए हम ध्यान रखें कि (वनस्पति) वनस्पति ही (यज्ञियः) यज्ञ के योग्य बनाने वाली है। हम सात्विक भोजन के द्वारा (देवी धियम्) दैवी सम्पत्ति का वर्धन करने वाली बुद्धि को (मनामहे) मांगते हैं। (समृडीकाम्) जो उत्तम सुखों को देने वाली है। (अभिष्टये) यह सब इष्टों की प्राप्त कराने वाली है, (वर्चोधाम्) यह हमें अपवित्र भोग मार्ग से बचाती है। (यज्ञ वाहसम्) यज्ञों को प्राप्त कराने वाली है (सुतीर्था) उत्तम तीर्थ है। (नः) हमारी (वशे) इच्छा से (असत्) रहे। (ये) जो (देवाः) देव (मनोजाताः) ज्ञान से विकास को प्राप्त हुए हैं। (मनोयुजाः) जो औरों को भी ज्ञान से जोड़ते हैं। (चाक्षुक्रतवः) शरीर व आत्मा के बल तथा प्रज्ञा व यज्ञ (क्रतु) से युक्त हैं, (ते) वे (देव, नः) देव हमें अवन्तु रक्षित करें (ते नः पान्तु) वे हमें रोगों से भी बचाएं। (तेम्यः स्वाहा) इन देवों के लिए हम अपने को समर्पित करते है। परमात्मा हमें व्रत के बन्धन में बांध कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाता है।

उदुत्तमं वरूण पाशमस्म-दवाधमं विमध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम यजुर्वेद 12.12

अर्थ-(वरूण) हे व्रतों के बंधन में बांध कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले प्रभो। (उत्तमम् पाशम् उत्) हमारे उत्तम बन्धन को हमसे बाहर कीजिए। (अस्मत्) इससे (अधमम्) नित्कृष्ट पाश को (अवश्रथाय) दूर करके ढीला कर

(शेष पृष्ठ 7 पर)

अठ्ठारवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की सुषुप्त चेतना को जगाने वाले प्रेरणा स्त्रोत

ले०-उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार

1857 ई. में जो स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा गया उसके जन्म दाता महर्षि स्वामी विरजानन्द जी थे। क्योंकि जिन राजाओं ने उस स्वतन्त्रता संग्राम यज्ञ में भाग लिया वे सब स्वामी विरजानन्द जी महाराज के शिष्य थे। और स्वामी विरजानन्द जी को इस पवित्र कार्य की प्रेरणा देने वाले उनके गुरू श्री स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती थे। उस स्वतन्त्रता आन्दोलन को जन-जन तक पहुंचाने वाले महर्षि स्वामी विरजानन्द जी के परम शिष्य महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी थे।

सच्चे साधु व सन्यासी जन संसार की दुर्दशा को देख नहीं सकते। उनमें सदा ''आत्मवत् सर्वभूतेषु'' की भावना अहर्निश कार्य करती रहती है। वो प्राणीमात्र के कलेशों को अपना कलेश एवं दुःख समझते है। वास्तव में वो ही सच्चे मानवता के पुजारी होते हैं। स्वामी विरजानन्द जी का एक मात्र ध्येय सारे भूमण्डल में वैदिक धर्म को फैलाना था। वह किस प्रकार से अपनी जन्म भूमि को म्लेच्छों के हाथ में देख सकते थे। अतः स्वतन्त्रता संग्राम यज्ञ के सर्व प्रथम जन्मदाता एवं सूत्रधार महर्षि स्वामी विरजानन्द जी महाराज थे। उनके परम शिष्य स्वामी दयानन्द जी ने उनके कार्य को पूरा किया।

समग्र वैचारिक क्रान्ति को जन-जन तक पहुंचाने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती

संवत 1917 वि. तदनुसार 1860 ई. में स्वामी दयानन्द जी गुरू विरजानन्द जी की पाठशाला में पहुंचे। स्वामी विरजानन्द जी से दयानन्द जी ने महाभाष्य, निरूक्त आदि आर्ष ग्रन्थों का गम्भीर अध्ययन किया और अपनी ज्ञान पिपासा को पूर्णतः शान्त किया। स्वामी विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को अपने तुल्य विद्यासागर बनाया। और गुरू दक्षिणा में आर्ष ग्रन्थों का प्रचार एवं वैदिक धर्म का प्रचार, भारत स्वातन्त्रय योजना और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन कार्य भार अपने कंधों से उतार कर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को सौंप दिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रचारक

मार्च 1857 स्वामी दयानन्द सरस्वती जी गंगा के साथ-साथ गंगोत्री और बद्रीनाथ से बनारस तक गढवाल, दोआव और काशी के प्रदेश में घूमते रहे। उस समय भारत स्वतन्त्रता प्राप्ति की क्रान्ति के लिए तैयारियाँ और जनता में गुप्त रूप से जोरों पर की जा रही थी। सन 1856 में स्वामी दयानन्द जी नाना साहब के नगर कानपुर में भी गये पांच मास पर्यन्त कानपुर और इलाहाबाद के मध्य में भ्रमण करते रहे। सन 1857 में क्रान्ति की पूर्ण तैयारियां हो गई, तब नाना साहब के अनेक सन्देश वाहक साधु क्रान्ति फैलाने के लिये, पूर्व, पश्चिम, उत्तर दक्षिण देश के सभी कोनों में फैल गये। स्वयं नाना साहब और उनके साथी आजीमुल्ला भी क्रान्ति की तिथि निश्चित कर यह सब कार्य अपनी आंखों से देखने के लिए तीर्थ यात्रा के माध्यम से भ्रमणार्थ चले। तब स्वामी दयानन्द जी भी बनारस से मिर्जापुर आदि स्थानों में होते हुए क्रान्ति का सन्देश फैलाने के लिये दक्षिण की ओर चल दिये।

सन 1857 से 1860 तक तीन वर्ष का स्वामी दयानन्द जी के जीवन का कोई इतिहास नहीं मिलता। इससे प्रकट होता है कि स्वामी दयानन्द जी ने 1857 की क्रान्ति में बढ़ चढ़कर कार्य किया और अपने हस्तलिखित जीवन में भी इस सम्बन्ध में उन्होंने कुछ लिखना किसी कारण वश उचित नहीं समझा।

उन्नीसवीं शताब्दी का जन जागरण दर्पण

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तथा अन्तिम चरण में भारत का भविष्य एक नया मोड ले रहा था, सदियों से सुप्त पडी इस देश की चेतना अव्यक्त से व्यक्त की तरफ सुषुप्ति से जागृति की तरफ अग्रसर हो रही थी। सदियों से सोई पडी यह चेतना जब भारत के नव प्रभात में अंगडाई लेकर आंख खोलने लगी थी, तब 1772 में बंगाल के राजाराम मोहन राय ने और 1834 में राम कृष्ण परम हंस तथा उसी काल के आस पास स्वामी विवेकानन्द ने जन्म लिया। 1824 में गुजरात में महर्षि दयानन्द ने जन्म लिया। 1893 में मद्रास में थियोसोफिकल सोसाइटी ने जन्म लिया, और इसी काल में मुसलमानों में चेतना के संचार के लिये सर सैय्यद अहमद ने जन्म लिया। ये सब भारत की विभूतियां थी और इस देश के नव निर्माण का सपना लेकर गंगा और हिमालय की इस देश भूमि का सदियों का संकट काटने के लिए प्रकट हुई थी (सत्य की खोज प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार ग्रन्थ से)

गुरू विरजानन्द के सपनों को साकार करने रण क्षेत्र में उतरे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

महर्षि दयानन्द जी जब देश के रण क्षेत्र में उतरे तो चारों तरफ ललकार ही ललकार सुनाई दी, चुनौतियां ही चुनौतियां नजर आईं। वह थे विदेशी राज्य को बर्बाद करना तथा ऋषि दयानन्द जी ने समाज के शरीर की पीडा को और उसके रोग का अनुभव किया। उन्हें तो उस समय का सारा समाज चुनौती के रूप में दिखा। साधारण पुरूषों और महापुरूषों में अन्तर यह होता है कि साधारण पुरूष चुनौती को देखते हुए भी नहीं देखते, ललकार को सुनते हुए भी नहीं सुनते। महापुरूष समाज की पीड़ा को समझते है और अपने प्राणों की परवाह न करते हुए समर भूमि में उतर पड़ते हैं महर्षि दयानन्द जी ने भी समग्र चुनौतियों को स्वीकार किया उनके सामने हिन्दुओं का रूढ़िवाद एक महान चैलेन्ज था, जहां देखो वहां प्रथा की दासता सती प्रथा, बाल विवाह कुप्रथा, मूर्ति पूजा कुप्रथा, जाति-पाति छुआ छूत कुप्रथा, नारी व शूद्रों को वेद न पढ़ने देने की कुप्रथा, मन्दिरों में छोटी जाति को प्रवेश न करने की कुप्रथा, वैदिक धर्म को छोड़ कर कल्पित देवी-देवताओं की कुप्रथा, मत मतान्तरों के चलन की बाढ़ की कुप्रथा, इस प्रकार अनेक कुप्रथाओं का जीता जागता चैलेन्ज था। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सभी कुप्रथाओं को समाप्त करने का बीडा उठाया।

यद्यपि महर्षि दयानन्द जी के समय अन्य सुधारक भी हुए थे, किन्तु महर्षि दयानन्द जी व उन समकालीन महापुरूषों में अन्तर यह था कि वे महापुरूष समाज की बुराइयों में से एक एक बुराई के खिलाफ आवाज उठाई। ऋषि के अतिरिक्त उन महापुरूषों ने माना की वेदों में मूर्ति पूजा है, उन्होंने माना कि वेदों में नारी व शूद्रों को पढ़ाना मना है, उन्होंने माना कि वेदों में ईश्वर का अवतार होता है, ऐसा लिखा है। उन्होंने माना कि वेदों में नर बलि, पशु बलि करके देवताओं को खुश किया जा सकता है। क्योंकि तत्कालीन विद्वानों ने वेद मंत्रों के अर्थ के अनर्थ किये थे।

महर्षि दयानन्द जी ने सर्वप्रथम वेदों के रूढी अर्थों पर जोरदार प्रहार किया और संसार के सामने सिद्ध कर दिया कि जो तुम वेदों के अर्थ लगाते हो वह इतिहास परक अर्थ तो हो सकते है किन्तु ईश्वर परक, सृष्टिक्रमानुसार अर्थ व विज्ञान के अनुसार अर्थ नहीं है। और निरूक्त, अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि आर्ष ग्रन्थों के अनुसार अर्थ करके संसार के धर्माचार्यों की चूलें हिला कर रख दी। और उन्नीसवीं सदी में एक नई आर्ष वैचारिक क्रान्ति को जन्म दिया। और संसार को वेदों की ओर लौटाया।

आर्यों अर्थात भारत के श्रेष्ठ पुरूषों पूर्वजों निंद्रा त्यागी अंगडाई लो-आइए हम अपने पूवर्जों का इतिहास पढ़कर अपना इतिहास भी बनाऐं।

1857 की स्वतन्त्रता क्रान्ति के असफल होने का कारण, भीतरघात तथा राष्ट्र के प्रति अनुराग न होना, और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों में स्वार्थ हेतु साथ देना, तभी देश द्रोहियों के कारण असफलता मिली। अंग्रेजों ने इस क्रान्ति को बुरी तरह कुचल दिया था। देशवासी को स्वाधीनता का नाम लेना भी भयानक था। ऐसी विषम परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द जी ने स्वतन्त्रता का नव जागरण किया। 1857 से 1947 तक महर्षि की प्रेरणा से लाखों नवयुवकों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपने प्राणों की आहूति दी थी, केवल आर्य समाजी अस्सी प्रतिशत आर्यों ने ही अपने गरम-गरम रक्त से जीवन बलिदान किये थे।

दुनिया बदलने वाले महापुरूषों के साथ अदूरदर्शी समाज की भी यह एक रीति है

युग प्रवर्तक समाज सुधारक महापुरूष अपने ज्ञान कर्म से जमाने को बदल देते हैं, जमाने को अपने पीछे चलाते है। समय की धारा बदल देते हैं, समाज की विचारधारा और दृष्टिकोण बदल देते है। एक नई धारा बहा देते है। किन्तु जड़वाद समाज उन्हें बर्दाश्त नहीं कर सकता है। जड़ समाज उनके लिए जहर व आग उगलते है, किन्तु वह महापुरूष उसके लिये तैयार रहते है सुकरात जमाने को बदलने आये थे उन्हें जहर पीना पड़ा, ईसा मसीह नई दुनिया का सपना लेकर आये थे उन्हें जिन्दा सूली पर लटकना पड़ा। दयानन्द जी समाज की समग्र कुरीतियों को समाप्त करने व समाज को नये सांचे में ढालने आये थे, उन्हें भी षडयन्त्रकारियों द्वारा दूध में जहर देकर प्राणों का बलिदान देना पड़ा। महात्मा गांधी, नया संसार बनाने आये ते, उन्हें गोली का शिकार होना पड़ा। यह निर्दयी समाज उन महापुरूषों को ज्यादा देर बर्दाश्त नहीं कर सकता है। किन्तु यह बलिदान देने वाले महापुरूष अपने पीछे एक व्यापक विचार शक्ति छोड़ जाते है, एक नवीन संसार का निर्माण कर जाते है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी समाज की तमाम समग्र बुराइयों को दूर करके दुनिया की विचारधारा ही बदल डाली है।

वेद से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

प्र.1-सृष्टि के आरम्भ में ईश्वरीय ज्ञान का उद्भव कैसे हुआ?
उत्तर-वेदों से।
प्र.2-वेद क्या है?
उत्तर- विशेष ज्ञान।
प्र.3-वेद कितने हैं?
उत्तर-चार।
प्र.4-चारों वेदों के नाम क्या हैं?
उत्तर-ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अथर्ववेद।
प्र.5-सृष्टि के आरम्भ में वेदों का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
उत्तर-आदि ऋषियों के द्वारा।
प्र.6-ऋग्वेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- अग्नि ऋषि द्वारा।
प्र.7-यजुर्वेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- वायु ऋषि द्वारा।
प्र.8-सामवेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर- आदित्य ऋषि द्वारा।
प्र.9-अथर्ववेद का ज्ञान किस ऋषि द्वारा प्राप्त हुआ?
उत्तर-अंगिरा ऋषि द्वारा।
प्र.10-ऋषियों को वेदों का ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ?
उत्तर-समाधि अवस्था में।
प्र.11-वेदों में कैसा ज्ञान है?
उत्तर-पवित्र, वैज्ञानिक, तार्किक व सुख शान्ति तथा ज्ञान विकास का ज्ञान है।
प्र.12-ऋग्वेद में किस विद्या का ज्ञान है?
उत्तर-ज्ञान विद्या।
प्र.13- यजुर्वेद में किस विद्या का ज्ञान है?
उत्तर-कर्म विद्या का।
प्र.14-सामवेद में किस विद्या का ज्ञान है?
उत्तर-उपासना व गायन विद्या।
प्र.15-अथर्ववेद में किस विद्या का ज्ञान है?
उत्तर-विज्ञान व कला विद्या।
प्र.16-ऋग्वेद में कितने मण्डल हैं?
उत्तर-दस।
प्र.17-ऋग्वेद के मन्त्रों को क्या कहते हैं?
उत्तर-ऋचाएं।
प्र.18-ऋग्वेद में कितनी ऋचाएं हैं?
उत्तर-10552
प्र.19-यजुर्वेद के कितने अध्याय हैं?
उत्तर-चालीस।
प्र.20-यजुर्वेद में कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-1976
प्र.21-सामवेद के कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-1875
प्र.22-अथर्ववेद में कितने काण्ड हैं?
उत्तर-बीस काण्ड
प्र.23-अथर्ववेद में कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-5977
प्र.24-चारों वेदों में कुल कितने मन्त्र हैं?
उत्तर-20380
प्र.25-वेदों को समझने के लिए सहायक ग्रन्थ कौन-कौन से हैं?
उत्तर-उपवेद, वेदांग, उपनिषद, स्मृतियां आदि।
प्र.26-उपवेद कितने हैं?
उत्तर-चार-
प्र.27-ऋग्वेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-आयुर्वेद।
प्र.28-यजुर्वेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-धनुर्वेद।
प्र.29-सामवेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-गान्धर्व वेद।
प्र.30-अथर्ववेद का उपवेद कौन है?
उत्तर-अर्थवेद।
प्र.31-वेदांग कितने हैं?
उत्तर-छः हैं।
प्र.32-वेदांगों के नाम क्या हैं?
उत्तर-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरूक्त,ज्योतिष।
प्र.33-वेदांग के उपांग कितने हैं?
उत्तर-छः।
प्र.34-उपांगों के नाम क्या है?
उत्तर-न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदान्त।
प्र.35-उपांगों का अन्य नाम क्या है?
उत्तर-दर्शन शास्त्र।
प्र.36-उपनिषद कितने हैं?
उत्तर-ग्यारह उपनिषद प्रमाणिक माने जाते हैं।
प्र.37-ग्यारह उपनिषदों के नाम क्या हैं?
उत्तर-ईशोपनिषद, कठोपनिषद, केनोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डकोपनिषद, माण्डूक्योपनिषद, तैतिरियोपनिषद, ऐतरेयोपनिषद, छान्दोग्यापनिषद, बृहदारण्यकोपनिषद, श्वेताश्वेतरोपनिषद।
प्र.38-उपनिषदों कर रचना किसने की
उत्तर-ऋषियों ने।
प्र.39-न्याय दर्शन की रचना किसने की थी?
उत्तर-गौतम मुनि ने।
प्र.40-वैशेषिक दर्शन की रचना किसने की थी?
उत्तर-कणाद मुनि।
प्र.41-सांख्य दर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-कपिल मुनि।
प्र.42-योगदर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-पतंजलि मुनि।
प्र.43-मीमांसा दर्शन के रचयिता कौन थे?
उत्तर-जैमिनी मुनि।
प्र.44-वेदांत दर्शन के प्रणेता कौन थे?
उत्तर-वेद व्यास मुनि।
प्र.45-ब्राह्मण ग्रन्थ किसे कहते हैं?
उत्तर-वेदों के भाष्य को समझने के लिए इन ग्रन्थों को आवश्यकता होती है।
प्र.46-वेदों का भाष्य समझने के लिए मुख्य ब्राह्मण ग्रन्थ कितने हैं?
उत्तर-चार।
प्र.47-ऋग्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-ऐतरेय ब्राह्मण।
प्र.48-यजुर्वेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-शतपथ ब्राह्मण।
प्र.49-सामवेद का ब्राह्मण ग्रन्थ कौन सा है?
उत्तर-साम व ताण्ड्य महा ब्राह्मण।

कृष्ण जन्माष्टमी व श्रावणी उपाकर्म मनाया

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में 2 सितम्बर रविवार को कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में यज्ञ, भजनों के उपरान्त आर्य समाज के पुरोहित पं० बाल कृष्ण जी शास्त्री ने बताया कि महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि महाभारत के अन्दर श्री कृष्ण जी का चरित्र आदर्श दर्शाया गया जिन्होंने जीवन पर्यन्त कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिस पर ऊंगली उठाई जा सके। वह आप्त पुरूष थे। हमें उनके सही स्वरूप को जान कर उन द्वारा दी गई शिक्षाओं पर चलना चाहिए।

9 सितम्बर रविवार श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में एक विशेष कार्यक्रम प्रातः $8^1/_2$ से $10^1/_2$ बजे तक बड़ी श्रद्धा व उल्लास के साथ किया गया। श्रीमती ममता जी शर्मा ने बृहद् यज्ञ सम्पन्न करवाया जिस के मुख्य यजमान श्री आशीष भनोट व उनके परिवार के सभी सदस्यों ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां अर्पित की। समराला से पधारे पं० राजेन्द्र व्रत जी ने प्रभु भक्ति, राष्ट्र भक्ति, श्री कृष्ण व महर्षि दयानन्द पर अपने मधुर स्वर में भजन सुना श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध किया। श्री श्रवण बत्रा जी ने श्रावणी उपाकर्म का महत्व बतलाते हुए वेद में ज्ञान भण्डार का विस्तार से वर्णन किया व कुछ श्रुतियों का सहारा लेते हुए बतलाया कि वेद का एक ही मंत्र जीवन में अगर उतार लिया जाए तो हमारा कल्याण हो सकता है। इसलिए हमें अपने अन्दर स्वाध्याय की आदत अवश्य डालनी चाहिए। उपस्थिति उत्साह-वर्धक रही।

विजय सरीन

पृष्ठ 2 का शेष-'जन्म-मृत्यु रहस्य'

बन्धु व सखा है। वही जीवात्मा का वरणीय व उपासनीय है। जीवात्मा को ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव का ध्यान कर उसे अपनाना और अपने दुष्ट कर्मों का त्याग करना ही जीवात्मा की उन्नति है। इस के विपरीत जीवात्मा दु:ख व अवनति को प्राप्त होकर अपना परजन्म बिगाड़ता है।

जीवात्मा का अपने परिवारजनों व सामाजिक व्यक्तियों से शारीरिक सम्बन्ध होता है परन्तु दो जीवात्माओं का आपस में माता-पिता-भाई-बहिन-मित्र व अन्य कोई सम्बन्ध नहीं होता। मृत्यु होने पर मृतक की जीवात्मा के अपने परिवार व देशवासियों से सभी सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं। परिवार के जो लोग जीवित रहते हैं उनका भी मृतक जीवात्मा से कोई सम्बन्ध शेष नहीं रहता। अत: अन्त्येष्टि संस्कार के बाद मृतक की जीवात्मा के लिये कुछ भी किया जाना उचित नहीं होता और न ही वेदों में इसका कहीं विधान है। हां, परिवार के जीवित व्यक्तियों के सुख व शान्ति के लिये हम ईश्वरोपासना, अग्निहोत्र-यज्ञ, परोपकार व दान आदि के काम कर सकते हैं। यह भी जान लें कि ईश्वर व जीवात्मा स्वरूप से सत्य, चित्त, अनादि, नित्य हैं। इस का परस्पर सर्वज्ञ-अल्पज्ञ, व्याप्त-व्यापक, स्वामी-सेवक का सम्बन्ध है। ईश्वर अजन्मा है तथा जीव जन्म-मरण में फंसा हुआ है।

मनुष्य ईश्वरोपासना, यज्ञ, दान व परोपकार आदि कर्म करके बन्धनों से मुक्त होता है व ऐसा न करने से बन्धनों में फंसता है। ईश्वर सदा मुक्त और आनन्द से युक्त रहता है। जीवात्मा के जीवन का उद्देश्य वैदिक विधि से उपासना करके ईश्वर को पाना है। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं।

पृष्ठ 4 का शेष-व्रतमय जीवन जीना सीखो

दीजिए। हे वरूण। आप कृपा करके (मध्यमम्) रजो गुण युक्त बन्धन को भी (विश्रथाय) ढीला कर दीजिए। (अथ) अब तीनों बन्धनों को ढीला करके (वयम्) हम, हे (आदित्य) सूर्य (परमात्मा) (तव व्रते) तेरे व्रत में (अनागस) निष्पाप होकर (अदितये) पूर्ण स्वास्थ्य के लिए और अन्त में मोक्ष के लिए (स्याम्) होवें। यजुर्वेद व्रतों का लाभ बताते हुए कहता है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।

दक्षिणा श्रद्धामाप्नोतिश्रद्धया सत्यमाप्यते। यजु. 19.30

अर्थ-(व्रतेन) व्रत के द्वारा (दीक्षाम्) दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दीक्षया) दीक्षा द्वारा (दक्षिणाम्) दक्षिणा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दक्षिणा) दक्षिणा द्वारा (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है (श्रद्धायाम्) श्रद्धा द्वारा (सत्यम्) सत्य को (आप्नोति) प्राप्त करता है।

भावार्थ-व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्यादि नियमों से व्यक्ति सत्कर्मों का आरम्भ रूप दीक्षा, दक्षिणा, कुशलता को प्राप्त करता है। कार्य कुशलता से दक्षिणा अर्थात् प्रतिष्ठा एवं धन प्राप्त होता है। प्रतिष्ठा और धन के प्राप्त हो जाने से नियमों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा ही सत्य को प्राप्त करने का मुख्य साधन है। इसलिए हमें व्रती बनना चाहिए।

ऋषि कृत ग्रन्थों की कक्षाएँ आरम्भ

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान में अष्टाध्यायी अनुक्रम से संस्कृत व्याकरण, दर्शन एवं अन्य ऋषिकृत ग्रन्थों की कक्षाएँ प्रारम्भ हो रही हैं। अध्ययन आर्ष पाठविधि से कराया जायेगा। विद्यार्थियों के आवास एवं भोजनादि का सम्पूर्ण व्यय सभा की ओर से किया जायेगा। गुरुकुल सम्बन्धी सभी नियमों एवं दिनचर्या आदि का पालन अनिवार्य होगा। विद्यार्थी की आयु न्यूनतम १६ वर्ष हो। इच्छुक छात्र निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करें।

आचार्य
महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल,
ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.)
सम्पर्क ०१४५-२४६०१६४
Email-psabhaa@gmail.com

आर्य समाज बरनाला में श्रावणी-उपाकर्म पर्व सम्पन्न

दिनांक 26.08.2018 दिन-रविवार को आर्य समाज, बरनाला में श्रावणी उपाकर्म (रक्षा-बन्धन) पर्व वैदिक परम्परा अनुसार श्रद्धापूर्वक मनाया गया। पुरोहित श्री राम शास्त्री ने वेद मन्त्रोच्चारण द्वारा हवन सम्पन्न करवाया। तत्पश्चात उन्होंने इस पर्व के विषय में वैदिक व्याख्यान किया। श्री राम चन्द्र आर्य, श्रीमती रञ्जना मैनन, अध्यापिका-सुश्री ज्योति जी ने पर्वानुकूल आकर्षक भजनों के द्वारा उपस्थित श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध कर दिया। बरनाला की समस्त आर्य शिक्षण-संस्थाओं के विद्यार्थियों ने अवसर अनुकूल संगीत मय वैदिक-भजन का गान किया। श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज की प्राचार्या डॉ. श्रीमती नीलम शर्मा ने अपने वक्तव्य में इस पर्व को न केवल रक्षा-बन्धन बल्कि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से वातावरण की शुद्धता हेतु 'वनमहोत्सव' के लिए प्रेरित किया। आर्य समाज बरनाला के वेद प्रचार मन्त्री श्री राम कुमार सोबती ने अपने वक्तव्य में हवन-यज्ञ एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया। उप प्रधान-श्री हर मेल सिंह जोशी जी ने इस पर्व को महर्षि दयानंद सरस्वती की देन बताया क्योंकि ऋषि-मुनियों के द्वारा इस दिन से गृहस्थी वेदोपदेश ग्रहण करना प्रारम्भ करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मानयोग मंत्री श्री भारत भूषण मैनन ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज का विद्यार्थी इस देश का भविष्य है इसलिए इस वैज्ञानिक युग में सेलफोन का दुरूपयोग न करके अपने समय का सदुपयोग करें। इस अवसर पर गाँधी आर्य हाई स्कूल के प्रिंसीपल-श्री राज महेन्द्र, बरनाला के वरिष्ठ पत्रकार-श्री राम शरण दास गोयल तथा श्री सतीश सिन्धवानी ने अवसर अनुकूल अपने विचार प्रस्तुत किए अन्त में आदरणीय प्रधान-डॉ. सूर्यकान्त शोरी जी ने आगन्तुक सज्जनों का धन्यवाद करते हुए उन्हें अपने खाली-समय का सदुपयोग करते हुए वेद एवं आर्य समाज में उपलब्ध आर्ष ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा दी। इस प्रकार समाज एवं अपने परिवारों में वैदिक संस्कार जगाने के लिए प्रेरित किया। शान्ति-पाठ एवं प्रसाद-वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ **-तिलक राम मन्त्री आर्य समाज बरनाला,**

श्रावणी पर्व मनाया

आर्य समाज जीरा में श्रावणी पर्व मनाया गया दिनांक 26-08-18 दिन रविवार को आर्य समाज जीरा में बड़े ही हर्षोल्लास व उमंग के साथ श्रावणी पर्व मनाया गया जिसमें सर्वप्रथम वृहदयज्ञ पुरोहित किशोर कुणाल जी ने करवाया। तत्पश्चात् पुरोहित जी ने श्रावणी पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वेदों के विशेष रूप से पठन-पाठन व श्रवण इस श्रावण मास के पूर्णिमा के दिन करने के कारण यह पर्व आर्यों का एक महानतम व शिक्षाप्रद पर्व के रूप में जाना जाता है। हमें श्रावणी पर्व को अपने जीवन में दैनिक यज्ञ के समान समझते हुए वेदों को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लेना चाहिए। उसके बाद समाज के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य जी ने सभी आर्य सज्जनों को इस पर्व को संपन्न कराने के लिए धन्यवाद व साधुवाद किया।

अन्त में शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरण किया गया।

प्रधान सुभाष चन्द्र आर्य

श्री योगीराज कृष्ण चन्द्र जी का जन्म दिवस मनाया

आर्य समाज अलावलपुर में इस वर्ष का जन्माष्टमी त्यौहार बड़े हर्ष-उल्लास के साथ मनाया गया। आर्य समाज की तीनों सस्थाओं ए. ऐस सीनियर सैकण्डरी स्कूल-आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द मॉडल स्कूल के सदस्यों स्टाफ एवं बच्चों ने पूरा सहयोग दिया।

मुख्यवक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं. विजय कुमार जी शास्त्री ने बहुत ही सारगर्भित उपदेश गीता के ऊपर दिया। श्री कृष्ण चन्द्र जी की शिक्षाओं का वर्णन किया गया। बच्चों ने भी गीत गाकर सबको भावविभोर कर दिया।

मुख्य उपस्थिति ए. एस. सीनियर सैकंडरी स्कूल के प्रिंसीपल श्री संजीव कुमार शर्मा-श्री जयप्रकाश शास्त्री अन्य अध्यापक हमारे वरिष्ठ उपप्रधान श्री परमानन्द जी कक्कड़ परिवार श्री विश्वामित्र गुप्ता, श्री शशि गुप्ता, मॉडल स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमति ऊषा भनोट एवं सभी अध्यापिकाएं बच्चे रहे। हमारे विद्वान मन्त्री श्री जय प्रकाश जी ने सभी का धन्यवाद किया शान्ति पाठ के बाद प्रसाद वितरित किया गया।

सत्यशरण गुप्ता

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में भाग लेने के लिये आह्वान

नई दिल्ली में 25 अक्तूबर से 28 अक्तूबर 2018 तक होने वाले अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों के सम्बन्ध में दिनांक 7 सितम्बर 2018 को आर्य कालेज लुधियाना में जिला लुधियाना, सरहिन्द, रायकोट की आर्य समाजों की एक बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी। चित्र दो में तैयारियों की जानकारी देते हुये सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी। उनके साथ बैठे हैं आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी, सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, श्री सुधीर शर्मा जी सभा कोषाध्यक्ष, श्रीमती राजेश शर्मा जी सभा उप प्रधाना एवं श्री विजय सरीन जी सभा मंत्री, श्री रणजीत आर्य सभा मन्त्री। चित्र तीन में आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री एवं आर्य जन।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक का आयोजन आर्य कालेज लुधियाना में 7 सितम्बर 2018 को किया गया। इस बैठक में 25 अक्तूबर से 28 अक्तूबर 2018 को दिल्ली में हो रहे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियों के सम्बन्ध में चर्चा की गई। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने बताया कि दिल्ली में एक अदभुत और ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन अक्तूबर मास में होने जा रहा है जिसमें भाग लेने के लिये उन्होंने सभी आर्यजनों को आह्वान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने विस्तृत जानकारी देते हुये कहा कि इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिये शीघ्र अति शीघ्र निश्चय कर सभा को संख्या सूचित करें ताकि वहां ठहरने की उचित व्यवस्था की जा सके।

इस बैठक में सभी उपस्थित आर्यजनों द्वारा इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिये बहुत उत्साह दर्शाया गया। सभा कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट एवं श्री रणजीत आर्य जी सभा मन्त्री भी इस बैठक में पधारे हुये थे। उपस्थित आर्यजनों ने सम्मेलन में बारे में भी अपने अपने सुझाव दिये। इस बैठक में लुधियाना, रायकोट, दोराहा, सरहिन्द की सभी आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री तथा अन्य आर्यजन सम्मिलित हुये। इस अवसर पर आर्य समाज स्वामी श्रद्धानंद बाजार से श्रीमती राजेश शर्मा जी, श्री राजेन्द्र शर्मा जी, आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार से श्री सतपाल नारंग, संत कुमार, सुरेन्द्र कुमार, सुमित टंडन आर्य, आर्य समाज जवाहर नगर से श्री विजय सरीन जी, बृजेश पुरी जी, आर्य समाज हबीवगंज लुधियाना से श्री जनकराज, श्री मनोहर लाल आर्य, आर्य समाज फील्ड गंज से श्री रमेश सूद, प्रवीण सूद, आर्य समाज पार्क लेन से श्री श्रवण कुमार, डा. बी.के. भनोट, आर्य समाज रायकोट से श्री राजेन्द्र कौड़ा, मुनीन्द्र दास महन्त, दोराहा से श्री अरुण थापर, श्री अरुण सूद, आर्य कालेज की प्रिंसीपल श्रीमती सविता उप्पल, सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा, स्त्री आर्य समाज साबुन बाजार से श्रीमती इन्दिरा होडा, नीना बेरी जी, स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना से श्रीमती जनक रानी, प्रभा सूद, आर्य समाज सरहिन्द से श्री राकेश सूद, श्री जगनरेश सूद, श्री अमरजीत सूद, श्री लव कुमार सूद एवं अन्य आर्यजनों ने भाग लिया। उल्लेखनीय है कि विगत दिनों जालन्धर में भी आर्य महासम्मेलन में जाने के लिये और उनकी तैयारियों के लिये एक बैठक का आयोजन किया गया था।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के आर्य कालेज लुधियाना में पहुंचने पर पुष्पगुच्छ देकर स्वागत करती हुई प्रबन्ध समिति की सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा एवं प्रिंसीपल सविता उप्पल जी। चित्र दो में मीटिंग हाल का उद्घाटन करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनके साथ हैं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी, प्रिंसीपल सविता उप्पल जी, श्री विजय सरीन जी। चित्र तीन में आर्य कालेज की मैगजीन आर्यन का विमोचन करते हुये सभा अधिकारी एवं अन्य।

आर्य समाज फील्डगंज लुधियाना में जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया

आर्य समाज मंदिर फील्डगंज लुधियाना में 3 सितम्बर सोमवार को जन्माष्टमी पर्व बड़ी श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें शहर के गणमान्य व्यक्तियों ने पहुंच कर बहुत ही आनन्द मनाया। आर्य समाज मंदिर को रोशनी से सजाया गया था। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्रीमती सविता धर्मपत्नी पंडित राजिन्द्र जी शास्त्री ने भजनों के माध्यम से किया। उसके बाद श्री रमेश सूद जी महामंत्री एवं पंडित राजिन्द्र शास्त्री जी ने भजन सुना कर सभी आए हुये महानुभावों को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री राजिन्द्र शास्त्री जी ने श्रीकृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके चलाये हुये सन्मार्ग पर चलने का संदेश दिया। कार्यक्रम देर रात्रि तक चलता रहा। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से श्री चन्द्र जी गम्भीर, श्री विनोद जी सूद, श्री प्रवीण सूद, श्री सुमित जी नय्यर, विन्नी सभ्रवाल, कीर्ति, प्रिया, सविता आदि ने भाग लिया। इसके पश्चात ऋषि लंगर लगाया गया। विन्नी सभ्रवाल ने आए हुये सभी बच्चों को बिस्कुल बांटे।

–रमेश सूद महामंत्री

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।